

है भगवान तेरी माया का भेद समझ ना आया

है भगवान तेरी माया का भेद समझ नहीं आया
धरति ओर आकाश बीच में खम्बा ना दर साया

पल में रचदे पुश की टपलि पल में महल चिनाया
पल में रचदे किला गढ़ सुन्दर सिर पर छतर फिराया
है भगवान तेरी,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,

चात्रक नार पुत्र बिन तरसे एक पुत्र नहीं जाया
फूड़ नार सुत नित्का जन्मे जन जन खोदि काया
है भगवान तेरी,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,, ,

पल में रचदे सुन्दर जवानी चले निरखतो छाया
पल के माइ झर झर रोवे देख भुड़ापा आया
है भगवान तेरी,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,

पल माही जल से जंगल भर दे तेरी अनोखी माया
पिथा राम कवे सुण अणतु हरि से हेत लगाया
है भगवान तेरी माया का ,,,,,,,,,,

सिंगर , भक्तगण
लेखक , अणतु राम जि रतनगढ़ चूरु राजस्थान
प्रेसक, संतोष कुमार & राजकुमार कनवारी (चरु)

<https://www.bhajanganga.com/bhajan/lyrics/id/21190/title/he-bhagwan-teri-maya-ka-bhej-samjh-na-aaya>

अपने Android मोबाइल पर [BhajanGanga](#) App डाउनलोड करें और भजनों का आनंद लें ।